तेजस् शरीर

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

कोई भी जीवित प्राणी शरीर से प्रवृत्ति करता है। शरीर में पांच इन्द्रियां होती हैं। शरीर को कार्य करने के लिए तेजस् शरीर ऊर्जा प्रदान करता है। चेतना, मन चित्त से जुड़ा रहता है। चेतन मन का संचालन तेजस् शरीर करता है। लब्धिवीर्य आत्मा की शक्ति है और शरीर की शक्ति कर्णवीर्य है। संसार की सबसे बड़ी फैक्ट्री तेजस् शरीर है। वहां रूपान्तरण होता है। तेजस् शरीर के रूपान्तरण द्वारा मूर्ख भी विद्वान बन जाता है। यह प्रक्रिया आंतरिक है। आंतरिक परिवर्तन से दृढ़ता प्राप्त होती है।

तेजस शरीर बहुत महत्वपूर्ण है। चेतन मन स्थूल शरीर का संचालन करता है। यहां पर परिवर्तन होता है। तेजस् शरीर पुल का कार्य करता है। अचेतन मन कार्मण शरीर है। यह आत्मा के साथ चिपका रहता है। इसे साधना के द्वारा अलग किया जाता है। यह विषयों को ग्रहण करके चेतन मन के पास भेजता है। जैसे भोजन बनाने के लिए वस्तुओं की आवश्यकता होती है वैसे ही तेजस् शरीर कार्य करता है। पुरानी घटना यहां पर अंकित रहती है और कभी यह याद आ जाती है। यह घटना अवचेतन मन में स्थित रहती है।

ऋषि–मुनि ध्यान साधना के द्वारा अवचेतन मन में सभी बातों को स्थित कर देते हैं। यहां प्रत्येक कार्य समयानुकूल होता है। वे लोग शरीर को एक प्रयोगशाला बनाकर इसे सक्रिय करते हैं। अचेतन मन आठ प्रकार के कर्मों का पुलिन्दा होता है। पुण्य और पाप का उदय भावनाओं के अधीन होता है। किसी भी कार्य का उदय चाहे पुण्य हो या पाप हो इसे देखा नहीं जा सकता। कार्मण शरीर और आत्मा से अध्यवसाय को पाकर भाव बाहर आते हैं। जब तक भाव अन्दर हैं तब तक वे कलरलेस हैं। किन्तु जैसे ही वह अवचेतन मन में आया वैसे ही कलरलेस लेश्याएं कलर्ड हो जाती है। लेश्याएं छः प्रकार की हैं। जैसा भाव रहता है उसी रंग में यह रंग जाती हैं।

प्राणी की प्राण शक्ति का मूल स्रोत तेजस् शरीर है। इसे श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुरेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, स्पर्शनेन्द्रिय, मनोबल, वचनबल, शरीरबल श्वासोच्छवास और आयुष्य दस प्राणी शक्तियों का संचालन सूत्र माना गया है। पौद्गलिक लेश्या का आभामण्डल तेजस् शरीर से निष्पन्न होता है। यह प्राणी के शरीर के साथ बनता है और मृत्यु के साथ समाप्त हो जाता है। प्राणी न शुद्ध अर्थ में चेतन है और न शुद्ध अर्थ में पुद्गल। वह दोनों का संयोग है। तेजस शरीर हमारे पाचन, सक्रियता, दीप्ति और तेजस्विता का मूल है। यह पूरे स्थूल शरीर में व्याप्त रहता है। इस शरीर का प्रेरक तत्व है अतिसूक्ष्म कर्म शरीर। हमारे अर्जित कर्म संस्कारों के अनुरूप तेजस् शरीर स्पन्दित होता है। प्राणधारा विकृत करता है और आभामण्डल का निर्माण करता है।

तेजस् शरीर के साथ तेजो लेश्या, तेजोलब्धि और तेजस् समुदघात जैसे क्रियाएं जुड़ी हुई हैं। यह सूक्ष्म पुद्गलों से निर्मित होने के कारण आंखों से दिखाई नहीं देता। तप द्वारा उपलब्ध तेजस् शरीर ही तेजोलेश्या है। इसे तेजोलब्धि भी कहते हैं। तेजों लेश्या शुभ लेश्या है। शुभ की यात्रा पर यह पहला रंग हुआ। तीन रंग है शुभ के, तेज, पद्म, शुक्ल। तेज हिंदुओं ने चुना है, शुक्ल जैनों ने चुना हैं। पद्म दोनों का मध्य भाग है। बुद्ध हमेशा मध्य मार्ग के पक्षपाती थे। बुद्ध कहते थे कि जो है वह मूल्यवान नहीं है, क्योंकि उसे छोड़ना है और जो अभी हुआ नहीं वह भी बहुत मूल्यवान नहीं, क्योंकि उसे अभी होना है, दोनों के बीच में साधक हैं। तेज यात्रा का प्रथम चरण है, शुभ्र यात्रा का अंतिम चरण है। पूरी यात्रा तो पीत की है।

अहंकार दूसरे का विनाशक है। धर्म शुरू होता है वहां से जहां से हम अहंकार को छोड़ते हैं। संघर्ष छोड़ता हूं, दूसरे को हराना, दूसरे को मिटाना, दूसरे को दबाने का भाव छोड़ता हूं। अब मेरे प्रथम होने की दौड़ बंद होती है। अब मैं अंत में भी खड़ा हूं, तो भी प्रसन्न हूं। संन्यासी का अर्थ ही यही है कि जो अंतिम खड़े होने को राज़ी हो गया।

दूसरी शुभ लेश्या है पद्म लेश्या। जैसे ही अहंकार जल जायेगा, तो लाली पीत होने लगेगी। सुबह का सूरज जैसे–जैसे ऊपर उठने लगता है, वैसा लाल नहीं रह जायेगा, पीला हो जायेगा। स्वर्ण जैसा पीत रंग प्रगट होने लगेगा। जब स्पर्धा छूट जाती है, संघर्ष छूट जाता है,

दूसरों से तुलना छूट जाती है और व्यक्ति अपने साथ राज़ी हो जाता है अपने में ही रमने लगता है, जैसे संसार हो या न हो कोई फर्क नहीं पड़ता, यह ध्यान की अवस्था है।

शुक्ल लेश्या चित्त की आखरी अवस्था है। झीने से झीना पर्दा बचा है, वह भी खो जायेगा। यह आत्मा का स्वभाव है। वहां सफेद भी नहीं बचता। उतनी उत्तेजना भी नहीं रहती। वही इन रंगों को फैलाव है। लेश्या हमारे व्यक्तित्व का प्रतिबिंब है। जैसे प्रतिबिंब में हमारे बाह्य व्यक्तित्व की छवियां उतरती रहती है, वैसे ही लेश्या के तंत्र में हमारा अंतरंग व्यक्तित्व प्रतिबिंबित होता रहता है। तेजोलब्धि सम्पन्न व्यक्ति ही तैजस समुद्घात करने में समर्थ होता है। तेजोलब्धि संग्रहीत ऊर्जा की अभिव्यक्ति हैं तेजोलब्धि जिसके पास होती है वह उसका उपयोग निर्माण और विध्वंस दोनों में कर सकता है।